

The Fire of Hiroshima

Toshi Maruki

This is a true story. It is truly moving. The bomb which fell on Hiroshima caused tremendous havoc. Fifty years have passed but people are still dying of the lethal radioactive waves. This story will jolt you - shake you. Hopefully, after reading this story some people will withdraw from war and instead work for peace and good of humankind.



यह एक सच्ची और दिल को दहलाने वाली कथा है। हिरोशिमा पर गिरे ऍटम-बम ने बेहद तबाही मचाई। पचास साल बीत चुके हैं परंतु उसकी घातक किरणों से आज भी लोग मर रहे हैं। इस कहानी को पढ़कर आपके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। इस सशक्त कहानी को पढ़कर तमाम लोग युद्ध से अपना नाता तोड़ेंगे और अमन-चैन, शांति के कामों में हाथ बटाएंगे।

हिरोशिमा की आग

तोशी मारुकी

अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

ABOUT THIS BOOK

In 1953 I was holding an exhibition of pictures about the atomic bomb, "Genbaku no Zu" in a small town in Hokkaido. Among the people at the exhibition I noticed a woman with a very angry expression on her face who stared at my pictures for a very long time. After a while she came out from the crowd and spoke to me.

"At first," she said, "I passed by your exhibit because I thought you were making a spectacle of suffering. I was determined not to come inside. But, now I am here and have seen your pictures, I want to tell you my story. "After the Flash, I moved here to Hokkaido. The people of Hokkaido were not sympathetic or kind about my experiences. When I would speak of the Flash, they would say I was trying to draw upon their pity or that I was exaggerating my story. After a while, I didn't feel like telling anyone anything, so I never spoke of the Flash.

The woman closed her eyes after speaking. Then she reached for the microphone and began shouting into it: "You people who have come here, you will believe me. Please listen to me! Please believe me!" And, crying and choking over her words, she recounted the story of how she had tried to escape the Flash, carrying her wounded husband upon her back and leading her child by the hand. People listened to her. Some cried. When she had finished, she said simply, "Thank you for listening."

The scene remained with me for a long time, piercing my heart and memory. This book is based on that woman's story, but woven into it is all that I have heard and seen of other people's experiences with the atomic bomb.

I am now past seventy years old. I have neither children nor grand children. But I have written this book for grandchildren everywhere. It took me a very long time to complete it. It is very difficult to tell young people about something very bad that happened, in the hope that their knowing will help keep it from happening again. I thank my editors, the Chiba brothers, for their help and encouragement.

I also thank my many good friends.

Toshi Maruki

इस पुस्तक के बारे में

१९५३ में मैंने होकायडो के एक छोटे शहर में ऍटम-बम पर बनाए अपने चित्रों की एक प्रदर्शनी लगाई थी। प्रदर्शनी देखने आने वाले लोगों में, मेरा ध्यान एक महिला की ओर गया। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था और वो मेरे चित्रों को बड़ी लगन के साथ देख रही थी। कुछ देर के बाद वो भीड़ में से निकलकर मेरे पास आई और मुझसे बातचीत करने लगी।

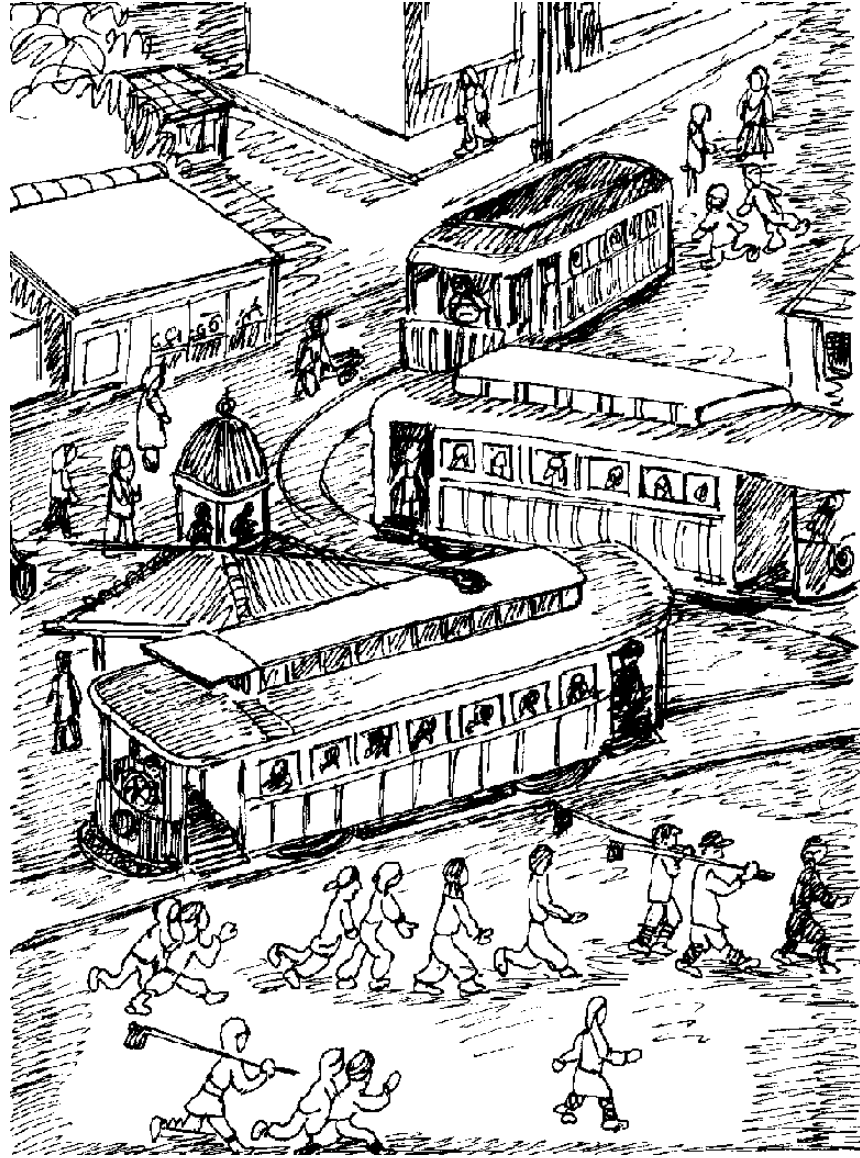
‘पहले मुझे लगा कि तुम उस भयानक विस्फोट की तबाही को गंभीरता से नहीं समझ पाओगी। इसलिए मैंने प्रदर्शनी को नहीं देखने का निर्णय लिया। परंतु मेरा मन न माना और फिर मैं अंदर आई। क्योंकि, अब मैंने तुम्हारे बनाए सभी चित्र देखे हैं इसलिए मैं तुम्हें अपनी कहानी सुनाना चाहती हूँ।’

‘विस्फोट के बाद मैं हिरोशिमा से होकायडो चली आई। यहां के लोगों ने मेरी तकलीफ और अनुभवों के प्रति कोई हमदर्दी नहीं दिखाई। जब कभी मैं लोगों को अपनी आप-बीती बताती, तो वो कहते - कि मैं हमदर्दी बटोरने के लिए घटना को बढ़ा-चढ़ा कर बयान कर रही हूँ। कुछ समय बाद मेरा मन उखड़ गया और तब से मैंने किसी को भी इस घटना के बारे में नहीं बताया है।’

विस्फोट की पूरी घटना सुन चुकने के बाद उस महिला ने अपनी आंखें बंद कर लीं। फिर उसने लाउडस्पीकर के मॉडक को पकड़ कर जोर-जोर से चिल्लाना शुरू किया, ‘तुम लोग जो यहां आए हो मेरी बात पर जरूर यकीन करोगे। कृपा करके मेरी बात सुनो! कृपा करके मुझ पर यकीन करो!’ और फिर रोते-बिलखते हुए उस महिला ने ऍटम-बम के विस्फोट की पूरी कहानी सुनाई - कैसे उसने पति को उठाया और बच्ची को हाथ पकड़कर पलायन किया। लोगों ने उसकी बात को बड़े ध्यान से सुना। कहानी खत्म होने के बाद कुछ लोग रोने लगे। अपनी आप बीती सुना चुकने के बाद उस महिला ने कहा, ‘मेरी कहानी सुनने के लिए आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद!’

उस घटना का मुझ पर गहरा असर हुआ। वो दृश्य मेरी रूह से हमेशा के लिए चिपक गया। यह कहानी उसी महिला की कहानी है। इसमें मैंने कुछ अन्य बातें भी जोड़ी हैं जिन्हें बम झेलने वाले अन्य लोगों ने मुझे बताया।

मेरी उम्र अब सत्तर साल से भी ज्यादा की हो गई है। मेरे न तो अपने बच्चे हैं और न ही कोई नाती-पोते। परंतु यह कहानी मैंने दुनिया भर के सभी नाती-पोतों के लिए लिखी है। इस कहानी को पूरा लिखने में मुझे बहुत समय लगा। बच्चों को इस दर्दनाक और शर्मनाक हादसे के बारे में बताना एक बहुत कठिन काम है। इस कहानी को सुनने के बाद, दुनिया के बच्चे, शायद ऐसे हादसे को कभी दुबारा नहीं होने देंगे।



That morning in Hiroshima the sky was blue and cloudless. The sun was shining. Streetcars had begun making rounds, picking up people who were on their way to work. Hiroshima's seven rivers flowed quietly through the city. The rays of the midsummer sun glittered on the surface of the rivers.

उस दिन जापान में हिरोशिमा शहर का आसमान नीला था। सूरज चमक रहा था। लोग बसों और ट्राम कारों में बैठ कर काम पर जा रहे थे। हिरोशिमा की सातों नदियां धीरे-धीरे बह रही थीं। सूरज की किरणें पानी की सतह पर थिरक रही थीं।



In Tokyo, Osaka, Nagoya, and many other Japanese cities there had been air raids. The people of Hiroshima wondered why their city had been spared. They had done what they could to prepare for an air raid. To keep fire from spreading, they had torn down old buildings and widened streets. They had stored water and decided where people should go to avoid the bombs. Everyone carried small bags of medicine and, when they were out of doors, wore air-raid hats or hoods to protect their heads.

जापान के कई बड़े शहरों - टोक्यो, ओसाका और नगायो पर हवाई हमले हो चुके थे। हिरोशिमा अभी इन हमलों से बचा था। हिरोशिमा के लोग इस बात से खुश थे। वैसे उन्होंने हवाई हमलों से बचने के लिए जो कुछ संभव था, वो तैयारियां की थीं। आग को फैलने से रोकने के लिए पुरानी इमारतों को गिरा दिया गया था और सड़कों को चौड़ा कर दिया गया था। जगह-जगह पर आग बुझाने के लिए पानी का प्रबंध किया गया था। बमबारी की स्थिति में, लोगों के छिपने के लिए सुरक्षित स्थान बनाए गए थे। हरेक नागरिक अपने साथ हमेशा दवाईयों की एक छोटी थैली रखता था। घर से बाहर निकलते समय लोग बमबारी से बचने के लिए खास प्रकार के कवच और हेल्मेट पहनते थे।



Mii was seven years old and lived in Hiroshima with her mother and father. She and her parents were breakfasting on sweet potatoes, which had been brought in the day before by cousins who lived in the country. Mii was very hungry this morning, and exclaimed about how good the sweet potatoes tasted. Her father agreed that they made a delicious breakfast, though they weren't the rice he preferred.

माई सात साल की थी और वो हिरोशिमा में अपने माता-पिता के साथ रहती थी। कल ही उसका चचेरा भाई गांव से आया था। वो अपने साथ खेत की कुछ ताजी शकरकंदी लाया था। माई अपने माता-पिता के साथ सुबह-सुबह शकरकंदियों का नाश्ता कर रही थी। माई को बड़ी भूख लग रही थी और शकरकंदियों उसे बहुत पसंद थीं।



Then it happened. A sudden terrible light flashed all around. The light was bright orange - then white, like thousands of lightning bolts all striking at once. Violent shock waves followed, and buildings trembled and began to collapse.

Moments before the Flash, United States Air Force bomber, Enola Gay had flown over the city and released a top-secret explosive. The explosive was an atomic bomb, which had been given the name "Little Boy" by the B-29's crew. "Little Boy" fell on Hiroshima at 8:45 on the morning of August 6, 1945.

तभी अचानक एक भयानक हादसा हुआ। चारों ओर आंखों को चौंधा देने वाली बिजली कड़की। बिजली पहले नारंगी और फिर सफेद रंग की हो गई। ऐसा लगा जैसे हजारों बादलों से, एक साथ बिजली गिरी हो। इस भयानक धक्के के प्रभाव से ऊंची-ऊंची इमारतें कांपने लगीं और ढहने लगीं।

इस प्रलय से कुछ क्षण पहले ही अमरीकी वायुयान के विमान इनोला गे ने हिरोशिमा के ऊपर उड़ान भरी थी। उसने ही इस विस्फोटक बम को गिराया था। यह कोई साधारण बम नहीं था। बी-२९ विमान के चालकों ने, बम का नाम 'लिटिल बॉय' रखा था।

'लिटिल बॉय' हिरोशिमा शहर पर ६ अगस्त १९४५ को सुबह आठ बजकर पंद्रह मिनट पर गिरा।



Mii was knocked unconscious by the force of the Flash, and when she woke up everything around her was still and dark. At first she couldn't move, and she heard crackling sounds that frightened her. Far off in the darkness she could see a red glow. Her mother's voice penetrated the dark, calling her. Mii struggled out from under the heavy boards that had fallen on top of her. Her mother rushed to her and drew her close and hugged her. "We must hurry," she said. "The fire... your father is caught in the flames!"

बम के विस्फोट के धक्के से, माई तुरंत बेहोश हो गई। कुछ घंटों के बाद जब उसे होश आया तब चारों ओर एकदम सन्नाटा था और आसमान का रंग काला स्याह हो गया था। शुरू में तो वो हिल भी नहीं पाई। वो अन्य सब चीजों को जलता हुआ देखकर डर गई। फिर अंधेरे में, कुछ दूरी पर उसे एक लाल रोशनी दिखाई दी। कुछ देर बाद उसे मां की आवाज सुनाई पड़ी। मां उसे बुला रही थी।

माई ने बड़ी मुश्किल से अपने ऊपर पड़े हुए लकड़ी के तख्ते को हटाया। तब तक मां उसके पास दौड़ी हुई आई और उसे अपने गले लगा लिया। 'हमें जल्दी करना चाहिए,' मां ने कहा, 'देखो, तुम्हारे पिता आग में कितनी बुरी तरह से फंसे हैं।'



Mii and her mother faced the fire and began to pray. Then Mii's mother leaped into the flames and pulled her husband to safety.

Mii watched as her mother examined her father. "He's hurt badly," she said. She untied the sash from her kimono and wrapped it around her husband's body as a bandage. Then she did something amazing. She lifted him onto her back and, taking Mii by the hand, started running.

कुछ देर तक तो माई और मां आग का भयानक तांडव देखती रहीं। फिर मां तेजी से लपटों में घुसी और पिता को सुरक्षित निकाल कर बाहर लाई।

अच्छी तरह से पिता की हालत का मुआयना करने के बाद मां ने कहा, 'बहुत बरी तरह से जल गए हैं।' फिर उन्होंने अपने किमोनो के कमरबंद को खोला और उससे अपने पति के शरीर पर पट्टी बांधी। उसके बाद उन्होंने पति को पीठ पर उठाया और माई का हाथ पकड़ कर दौड़ने लगीं।



"The river. We must reach the river." Mother directed.

The three of them tumbled down the riverbank and into the water. Mii lost hold of her mother's hand.

"Mii-chang! Hang on to me!" her mother shouted.

There were crowds of people fleeing the fire. Mii saw children with their clothes burned away, lips and eyelids swollen. They were like ghosts, wandering about, crying in weak voices. Some people, all their strength gone, fell face down on the ground, and other fell on top of them. There were heaps of people everywhere.

नदी की तरफ चलो। हमें जल्दी से जल्दी नदी पर पहुंचना है,' मां ने आदेश दिया।

तीनों तेजी से नदी में जाकर पानी के अंदर कूद पड़े। कूदते समय मां को माई का हाथ छोड़ना पड़ा।

'माई-चान! मुझे कस कर पकड़ी रहो,' मां चिल्लाई।

आग से बचने के लिए भागने वालों की लंबी भीड़ थी। माई ने देखा कि बहुत से बच्चों के पूरे कपड़े जल गए थे और उनके होंठ और आंखों की पलकें फूल गई थीं। वो इधर-उधर भटकते और चिल्लाते भूतों जैसे घूम रहे थे। कुछ लोग इतने कमजोर हो गए थे कि वो सीधे मुंह के बल जमीन पर गिर पड़े। बाकी लोग उनके ऊपर गिर गए। हर तरफ लोगों का ढेर था।



Mii and her mother and father continued their escape and crossed another river. When they reached the far bank, Mii's mother put her husband down and collapsed on the ground beside him.

Mii felt something moving past her feet. Hop...hop... It was a swallow. Its wings were burned, and it couldn't fly. Hop... hop...

She saw a man floating slowly down the river. Floating behind him was the body of a cat.

माई और उसके माता-पिता ने पलायन जारी रखा। जल्दी ही उन्होंने एक दूसरी नदी को पार किया। नदी के किनारे पर पहुंचते ही मां ने पति के शरीर को तट पर रखा और वो खुद उसके पास लुढ़क गई।

माई को अपने पैरों के पास कोई चीज चलती हुई महसूस हुई। टप... टप... करके चल रही थी।

एक आदमी का शरीर धीरे-धीरे नदी पर तैरता हुआ जा रहा था। उसके पीछे-पीछे एक बिल्ली भी थी।



Mii turned and saw a young woman holding a baby and crying. "We escaped this far and then I stopped to feed him," she said. "But he wouldn't take his milk. He's dead." The young woman, still holding her baby, waded into the river. She waded deeper and deeper, until Mii couldn't see her anymore.

जब माई ने पीछे मुड़ कर देखा तो उसे एक कम उम्र की औरत दिखाई दी। वो एक बच्चे को पकड़े हुए थी और रो रही थी। 'हम किसी तरह यहां तक तो बच कर आए और फिर मैंने इसे दूध पिलाना बंद कर दिया,' उसने कहा। 'पर अब वो दूध नहीं पी रहा है। वो मर गया है।' वो औरत अपने बच्चे को कलेजे से चिपटाए हुए नदी में घुसी। धीरे-धीरे करके वो गहरे, और गहरे पानी में गई और अंत में माई की आंखों से ओझल हो गई।



The sky grew dark, and there was a rumble of thunder. It began to rain. Though it was midsummer, the air turned very cold, and the rain was black and sticky.

Then a rainbow arched across the sky, pushing the dark away. It gleaned brightly over the dead and wounded.

इस बीच में आसमान काला स्याह हो गया था और बादल गरजने लगे। फिर बारिश होने लगी।
वैसे तो गर्मी का मौसम था परंतु फिर भी हवा काफी ठंडी थी। ऊपर से गिर रही बारिश एकदम
चिपचिपी थी और उसका रंग भी काला था।

फिर आसमान में एक इंद्रधनुष निकला। उससे आसमान की कालिख कुछ कम हुई। इस मंद रोशनी
में, मरे हुए और जखमी हुए लोग साफ दिखाई देने लगे।



Mii's mother lifted Father onto her back again. She took Mii by the hand, and they began to run. Fire was moving toward them at a terrible speed. They ran among piles of cracked roof tiles, over fallen telephone poles and wires. Houses were burning on every side. They came to another river, and once in the water Mii felt suddenly sleepy. Before she knew it, she had gulped down mouthfuls of water. Her mother pulled her head above the water. They reached the other side and kept running.

एक बार फिर से मां ने अपने पति के शरीर को उठाया और माई का हाथ पकड़कर दौड़ना शुरू किया। आग की लपटें भी तेजी से उनका पीछा कर रहीं थीं। दौड़ते समय कभी वो छतों के मलबे से टकराते और कभी उनके पैर गिरे हुए टेलीफोन के खंभों के तारों में उलझ जाते। हर ओर धू-धू करके घर जल रहे थे। अब वो तीसरी नदी के पास पहुंचे। पर पानी में उतरते ही माई को नींद की झपकी आ गई। इससे पहले कि उसे कुछ पता चलता वो कई घूंट पानी पी चुकी थी। मां ने झटके से माई के सिर को पानी के बाहर निकाला। दौड़ते-दौड़ते वे नदी के दूसरे किनारे पर पहुंचे।



At long last they reached the beach outside Hiroshima. They could see, Miyajima Island, wrapped in purple mist, across the water. Mii's mother had hoped they could cross over to the island by boat. Miyajima was covered with beautiful pine and maple trees and surrounded by clear water. Thinking that safety was not far away, Mii and her mother and father fell asleep.

अंत में वे एकदम हारे-थके, हिरोशिमा के बाहर समुद्र के तट पर पहुंचे। उन्हें समुद्र में दूर स्थित मियाजामा का टापू दिखाई दे रहा था। टापू एक बैंगनी धुंध में लिपटा था। 'काश! हमारे पास नाव होती और हम उस टापू पर पहुंच पाते,' मां सोचने लगी। मियाजामा टापू चीड़ और मेपिल के सुंदर पेड़ों से ढंका था। वहां का पानी भी साफ और निर्मल था। तबाही से इतनी दूर आकर अब माई और उसके माता-पिता अपने आप को थोड़ा सुरक्षित महसूस कर रहे थे। थक कर पस्त होने के कारण वे वहीं समुद्र के तट पर ही लेट कर सो गए।



The sun went down. Night came and went. The sun rose, and then set. It rose and set again, then rose for the third time.

"Please, tell me what day it is," Mii's mother, asked a man who was passing by. He had been looking over the people lying on the beach.

"It's the ninth," he answered.

Mother counted on her fingers. "Four days!" she cried out in amazement. "We've been here four days?"

सूरज डूबा। फिर रात आई और गई। फिर सूरज उगा और अस्त हुआ। एक बार फिर सूरज चमका और डूबा। तीसरे दिन सूरज फिर उगा।

‘आज कौन सा दिन है?’ माई की मां ने पास से गुजरते एक आदमी से पूछा। वो आदमी समुद्र के किनारे पड़े हुए लोगों को देख रहा था।

‘आज नौ तारीख है,’ उसने जवाब दिया।

मां ने अपनी उंगलियों पर हिसाब लगाया। ‘चार दिन!’ उन्होंने एकदम चकित होते हुए कहा, ‘हम लोग यहां पर चार दिनों से पड़े हैं?’



Mii started to cry softly. An old woman who was lying nearby sat up and took a rice ball out of her bag and gave it to Mii. When Mii took it from her, the woman fell down again. This time she didn't move.

"Mii-chan! You're still holding your chopsticks!" her mother exclaimed. "Here, let me have them." But Mii's hand wouldn't open. Her mother pried her fingers open one by one. Four days after the bomb, Mii let go of her chopsticks.

तभी माई रोने लगी। शायद उसे भूख लगी थी। एक बूढ़ी औरत पास ही में पड़ी थी। उसने अपनी थैली में से चावल का एक लड्डू निकाल कर माई को दिया। लड्डू देने के बाद वो बूढ़ी औरत गिर पड़ी। फिर वो दुबारा वापस नहीं उठी।

‘माई चान! तुम अपने हाथ में अभी भी चॉप-स्टिक्स (चावल खाने के लिए लकड़ी की दो डंडियां) पकड़े हो,’ मां ने कहा, ‘उन्हें तुम मुझे दे दो।’ परंतु तमाम कोशिशों के बाद भी माई का हाथ नहीं खुला। मां ने एक-एक करके माई की उंगलियों को खोला। बम गिरने के चार दिनों बाद ही माई ने हाथ में पकड़ी चॉप-स्टिक्स को छोड़ा।



Fireman came from a nearby village to help them. Soldiers came and took the dead away. A school building that was still standing had been turned into a hospital, and they took Father there. There were no doctors, no medicine, no bandages - only shelter.

With Father as safe as possible in the hospital. Mii and her mother decided to go back into the city to see if anything was left of their home. There were neither grass nor trees nor houses left in Hiroshima. A burnt out wasteland stretched before them as far as the eye could see. Mii and her mother found everything destroyed. The only thing left to remind them they had ever lived there was Mii's rice bowl. Bent and broken, it still contained some sweet potatoes.

इस बीच में पास के गांव से आग बुझाने वाला दल उनकी सहायता के लिए आ पहुंचा। सिपाहियों का दस्ता मरे लोगों की लाशों को उठाकर ले गया। एक स्कूल की इमारत ध्वस्त नहीं हुई थी। उसी में एक काम चलाऊ अस्पताल खोला गया। माई के पिता को उसी अस्पताल में दाखिल किया गया। अस्पताल में डाक्टर, दवाई, मलहम-पट्टी कुछ भी नहीं था। वहां सिर्फ रहने भर का ठिकाना था।

अस्पताल में पिता को भर्ती कराने के बाद माई और उसकी मां ने शहर जाकर अपना पुराना घर देखने की सोची। क्या वहां कुछ बचा होगा? पूरे हिरोशिमा में कोई भी पेड़ या घर नहीं बचा था। यहां तक कि घास का एक-एक तिनका तक जल गया था। पूरा शहर जलकर राख हो गया था। हिरोशिमा एक बहुत बड़ा शमशान नजर आ रहा था। काफी तलाशने के बाद उन्हें अपने घर के पास माई का चावल खाने वाला कटोरा पड़ा मिला। वो कभी उस घर में रहते थे, यही उसका एकमात्र सबूत बचा था। कटोरा मुड़ गया था और थोड़ा टूट गया था। पर उसमें अभी भी कुछ शकरकंदी के टुकड़े पड़े थे।



That day, August 9, 1945, as Mii and her mother looked at the rubble that had been Hiroshima, an atomic bomb was dropped on Nagasaki. And there, as in Hiroshima, thousands of people died, and anyone who survived was left homeless. Among the victims, in addition to the Japanese, were people from many other countries, such as Korea, China, Russia, Indonesia, and the United States.

The atomic bomb was unlike any explosive ever used before. The destruction on impact was greater than thousands of conventional bombs exploding all at once, and it also contaminated the area with radiation that caused deaths and illnesses for many years following the explosion.

Mii never grew after that day. Many years have passed, and she is still the same size she was when she was seven years old. "It is because of the Flash from the bomb," her mother says. Sometimes Mii complains that her head itches, and her mother parts her hair, sees something shiny, and pulls it out of her scalp with a pair of tweezers. It's a sliver of glass, imbedded when the bomb went off years ago that has worked its way to the surface.

९ अगस्त १९४५ के दिन जिस समय माई और मां अपने ध्वस्त शहर को देख रहीं थीं उसी समय जापान के एक और शहर - नागासाकी पर भी, एटम-बम गिराया गया। वहां भी हिरोशिमा की तरह ही हजारों की संख्या में लोग मरे और जो बचे उनका सारा घरबार तबाह हो गया। मरने वालों में केवल जापानी ही नहीं थे। इसमें अन्य देशों - कोरिया, चीन, रूस, इंडोनेशिया और अमरीका के लोग भी शामिल थे।

एटम-बम जैसे प्रलयकारी विस्फोटक, दुनिया में पहले कभी भी इस्तेमाल नहीं किया गया था। इसकी तबाही की क्षमता एक-हजार साधारण बमों के एक-साथ फटने से भी अधिक थी। इससे निकलने वाली विषैली रेडियो-धर्मी किरणें, सालों तक लोगों की बीमारी और मौत का कारण बनेंगी।

उस दिन के बाद से माई कभी नहीं बढ़ी। उसका विकास रुक गया। अब कई वर्ष बीत गए हैं परंतु माई का भार और ऊंचाई उतनी ही है जितनी कि सात साल की उम्र में थी। 'यह सब उस एटम-बम के विस्फोट के कारण हुआ,' उसकी मां का मानना है। कभी-कभी माई के सिर में बहुत खुजली होती है।



Mii's father had seven wounds in his body, but they healed and for a while he thought he was getting well. Then one day in autumn after the Flash, his hair fell out and he began coughing blood. Purple spots appeared all over his body, and he died.

Many of the people who had said, "Thank god, our lives were spared," later became ill with radiation sickness. Though this happened in 1945, some of these people are still in hospitals. There is no cure for their disease.

तब मां, माई के सिर में बालों में टटोलती है। और चिमटी की मदद से किसी चमकीली चीज को खींचकर बाहर निकालती है। यह वो कांच का टुकड़ा है जो विस्फोट के समय माई के शरीर में धंस गया था और अब धीरे-धीरे करके चमड़ी के बाहर निकल रहा था।

माई के पिता के शरीर में सात घाव थे। कुछ समय बाद घाव भर गए और उन्हें लगा कि अब वो पूरी तरह ठीक हो गए। लेकिन विस्फोट के बाद जब पतझड़ का मौसम आया तो एक दिन उनके सारे बाल झड़ गए और उन्हें खून की खांसी शुरू हो गई। उनके पूरे शरीर पर बैंगनी धब्बे पड़ गए। कुछ दिनों बाद वो चल बसे।

बहुत से लोगों ने यह कहा, 'भगवान का बड़ा शुक्र है, चलो हम कम-से-कम बच तो गए।' लेकिन बाद में इनमें से बहुत से लोग एंटम-बम की बीमारी के शिकार हुए। वैसे यह घटना १९४५ में घटी परंतु कुछ लोग आज भी अस्पतालों में हैं। इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है।



Every year on August 6 the people of Hiroshima inscribe the names of loved ones who died because of the bomb on lanterns. The lanterns are lit and set adrift on the seven rivers that flow through Hiroshima. The rivers flow slowly to the sea, carrying the lanterns in memory of those who died.

Mii, who is still like a small child after all these years, writes "Father" on one lantern and "The Swallow" on another. Her mother's hair has now turned white, and she watches sorrowfully as her daughter sets the lanterns afloat. "It can't happen again," she says, "if no one drops the bomb."

END

हरेल साल ६ अगस्त वाले दिन, हिरोशिमा के लोग ऍटम-बम से मरने वालों के नामों को कागज की लालटेनों पर लिखते हैं। इन लालटेनों को जला कर हिरोशिमा में बहने वाली नदियों में छोड़ा जाता है। धीरे-धीरे ये नदियां अपने साथ मरने वालों की याद में बनी ये लालटेनें लेकर समुद्र में विलीन हो जाती हैं।

माई इतने सालों बाद भी देखने में बिल्कुल छोटी बच्ची जैसी लगती है। वो एक लालटेन पर लिखती है 'पिताजी' और दूसरी पर लिखती है 'अबाबील'। मां दुखी आंखों से माई को लालटेनें नदी में छोड़ते हुए देखती है। मां के बाल अब पक कर सफेद हो गए हैं।

'अगर कोई दुबारा बम नहीं गिराएगा,' वो कहती हैं, 'तो यह तबाही फिर कभी नहीं होगी।'

अंत